सक्सेस मिरर

सफलता का कैप्सूल

Visit us at : www.pdgroup.in

वर्ष : 14 | अंक : 154 | फरवरी : 2023

इस अंक में...

5 सम्पादकीय

6 समसामयिकी घटना संग्रह

7 समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

17 आर्थिक घटना संग्रह

- जुलाई-सितम्बर 2022 में बेरोजगारी दर घटकर 7·2 प्रतिशत पर
- आयुष बाजार 18 अरब अमरीकी डॉलर के स्तर पर पहुँचा
- भारत का पहला ग्रीन स्टील ब्रांड-कल्याणी फेरेस्टा लॉन्च
- नितिन गडकरी ने लॉन्च किया पहला श्योरिटी बॉन्ड बीमा

21 राष्ट्रीय घटना संग्रह

- महाराष्ट्र में ₹ 75,000 करोड़ की परियोजनाओं का शुभारम्भ
- सैटेलाइट स्पेक्ट्रम नीलामी करने वाला पहला देश बनेगा भारत
- भूपेन्द्र पटेल दूसरी बार बने गुजरात के मुख्यमंत्री
- मेघालय मंत्रिमण्डल ने मानसिक स्वास्थ्य नीति को मंजूरी दी

25 अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह

- पुष्प कमल दहल प्रचंड बने नेपाल के नए प्रधानमंत्री
- नमामि गंगे संयुक्त राष्ट्र की 10 शीर्ष फ्लैगशिप पहल में शामिल
- भारत की जी-20 अध्यक्षता में पहली बैठक बेंगलूरू में शुरू
- प्रकृति को बचाने के लिए कनाडा में CoP-15 सम्मेलन

29 खेल खिलाड़ी

- वायकॉम18 करेगा पेरिस ओलम्पिक खेलों का भारत में सीधा प्रसारण
- ब्लाइंड टी-20 वर्ल्ड कप 2022 में भारत ने बांग्लादेश को 120 रन से हराया

34 विज्ञान समाचार

36 महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

38 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

लेख

41 **मौद्रिक लेख**—ई-रुपए की बढ़ती लोकप्रियता

42 **अन्तरिक्ष लेख**—ईओएस-06 मिशन—इसरो ने रचा इतिहास

43 **अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी लेख**—भारत की बढ़ती अन्तरिक्ष दक्षता

44 **प्राकृतिक खाद्य लेख**—पहाड़ी स्थानीय अनाज—स्वाद एवं स्वास्थ्य का खजाना

45 **प्रेरक लेख**—ज्ञान को ही सफलता का प्रवेश द्वार मानते थे डॉ. कलाम

विविध/सामान्य

65 **प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता**

67 **तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक-151 का परिणाम**

68 **रोजगार अवसर**

69 **अर्द्ध-वार्षिकांक : समसामयिक घटनाएं**

हल प्रश्न-पत्र

46 एस.एस.सी. मल्टी टॉस्किंग (गैर-तकनीकी) स्टाफ परीक्षा, 2020

54 छत्तीसगढ़ प्री.डी.एल.एड. परीक्षा, 2022

मॉडल हल

61 आगामी उत्तराखण्ड वनरक्षक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

संस्थापक सम्पादक : स्व. श्री महेन्द्र जैन | सम्पादक : राहुल जैन | रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा–2

ई-मेल : सम्पादकीय : publisher@pdgroup.in कस्टमर केयर : care@pdgroup.in

- सम्पादकीय ऑफिस : 1, स्टेट बैंक कॉलोनी, खन्दारी, आगरा-मथुरा बाईपास, **आगरा**–282 005 — **फोन**–2531101, 2530966
- दिल्ली ऑफिस : 4845, अंसारी रोड, दरियागंज, **नई दिल्ली**–110 002 — **फोन**–011-23251844, 43259035
- पटना ऑफिस : पारस भवन (प्रथम तल), खजांची रोड, **पटना**–800 004 — **मो**–09334137572
- हैदराबाद ऑफिस : 16-11-23/37, मूसारामबाग, टीगन गुडा, आर.टी.ए. ऑफिस के सामने मेन रोड, (यूनियन बैंक के बगल में), **हैदराबाद**–500 036 (तेलंगाना) — **मो**–09391487283
- हल्द्वानी ऑफिस : 8-310/1, ए. के. हाउस, हीरानगर, **हल्द्वानी**, जिला–नैनीताल–263 139 (उत्तराखण्ड) — **मो**–07060421008

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे–इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनीकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टोर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी **'सक्सेस मिरर'** की नहीं है.

सम्पादकीय

दिव्य बनने की सामर्थ्य प्रत्येक व्यक्ति में है

लक्ष्य और कर्तव्य के प्रति निष्ठा महानता की कुंजी है. हर छोटे-से-छोटा कार्य करने वाले व्यक्ति में भी दिव्य बनने की सामर्थ्य होती है. उसे कभी निराश नहीं होना चाहिए. उसे हमेशा यह याद रखना चाहिए कि वह अपने कर्तव्य का पालन निष्ठापूर्वक करे तथा अपने जीवन में कभी भी अपनी निष्ठा के साथ समझौता न करे.

जब हम संसार की दिव्य विभूतियों के जीवन पर दृष्टिपात करते हैं, तो पाते हैं कि दिव्य मानव बनने के लिए तीन स्पष्ट मार्ग प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध थे, उपलब्ध हैं और सदा ही हर काल में उपलब्ध होंगे. कोई भी व्यक्ति इन तीन मार्गों में से किसी एक का भी अनुसरण कर ले, तो संसार की कोई शक्ति उसे दिव्य मानव बनने से नहीं रोक सकती है. पहला मार्ग मनुष्य के सामने यह है कि वह प्रकृति से सहयोगपूर्वक जीवित रहना सीखे. जो प्रकृति के पदार्थ हैं उनका सीमित और संयमित उपयोग करे और साथ ही उनकी समृद्धि में सहायक हो. पूर्वकाल में मानव प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ को उसका वरदान मानता था और इसी दृष्टि से उसके प्रति कोमलता एवं संवेदनशीलता का व्यवहार करता था. प्रकृति भी फूलती-फलती रहती थी. मानव उसका उपयोग भी करता था और आनन्द भी लेता था. इसका परिणाम यह होता था कि प्रकृति के प्रति मनुष्य के विचार सदैव पवित्र और सदाशयतायुक्त होते थे. वृक्ष समय पर फल देते थे, मेघ समय पर वर्षा करते थे, आदि. तात्पर्य यह है कि प्रकृति और मानव के मध्य एक विचित्र प्रकार का तालमेल रहता था और ऐसा लगता था कि प्रकृति स्वयं मनुष्य की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करती रहती है.

आज के युग में इस प्रकार के तालमेल का सर्वथा अभाव दिखाई देता है. मानव प्रकृति को केवल जड़ मानता है और उसके पदार्थों को अपनी स्वार्थपूर्ति की दृष्टि से देखता है. फलतः वह प्रकृति का पूरी शक्ति के साथ दोहन और शोषण करता है. हम देखते हैं कि मनुष्य जंगलों को उजाड़ने में लगा है और विभिन्न प्रकार के रासायनिक खादों के प्रयोग द्वारा कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक उत्पादन करना चाहता है. सारांश है कि प्रकृति के प्रति उसकी सहयोग भावना और सदाशयता समाप्त हो गई है और उसने समस्त वातावरण को विचार प्रदूषण से भर दिया है. हम देखते हैं कि प्रकृति ने भी अपना ढंग बदल दिया है. बेमौसम वर्षा होना, भूकम्प आना, बाढ़ आना आदि के रूप में वह मानव को दण्डित करती रहती है. जिस प्रकृति से सहयोग करके मानव महानता की ओर अग्रसर होता था, उसी प्रकृति से संघर्ष करते हुए वह केवल स्वार्थ रक्षा में लगा रहता है और महानता से अपने को वंचित करता है.